ज़िन्दगी

अनिल कुमार लोहनी
वैज्ञानिक " स"

वर्तमान के चौराहे पर खड़ी ज़िन्दगी,
भविष्य की राह खोज रही है ।
लाचार सा खड़ा आदमी हाथ -पैर मार रहा है ।
दल-दल में फंसे परिंदे के समान,
भूत को दोहराता,भविष्य की सोचता
नकार रहा है वर्तमान को ।
एक पथ की ओर बढ़ता है,
फिर लौट जाता है अनिश्चय की स्थिति में
मंजिल में पहुँचने से पहले,दम तोड़ देता है,
इन असंमजस भरी राहों पर भटकते हुए ।

आत्मा की पुकार

अन्जु
वरिष्ठ शोध सहायक

बालक जब तुतलाकर बोला पहला अक्षर ।
हृदय माँ का हुआ झंकृत ।
फिर ज्यों-ज्यों वह विकास के पथ पर हुआ अग्रसित ।
वाणी में आयी उसके शिष्टता,सुन्दर अक्षर किये चयन ।
सुन उसे फिर माँ न हो सकी इतनी प्रसन्न ।
ऐसा होता क्यूँ ? उत्तर ढूँढ रहे मेरे प्रश्न ।
फिर खुद ही उत्तर पा जाती ये उलझन ।
वह पहला अक्षर था उसकी आत्मा की पुकार ।
अब शिक्षा है संस्कार है मगर सब है उधार ।
वह पहली आवाज उठी थी उसके प्राणों से
कर गयी मात के प्राणों को तृप्त ।
ऐसी ही पुकार आत्मा की कर देती परमात्मा को विह्वल ।
और बरस जाती धरा पर प्रेम की सुधा,रस बन-बन कर ।

***